अध्याय सप्तम

निष्कर्ष एवं सुझाव :

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध पवित्र संकुल गोरखधाम पर केन्द्रित करके इनका मानव शास्त्रीय विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।अभी तक भारत में काशी (सिन्हा और सरस्वती 1969),अयोध्या (वी .एस उपाध्याय 1974),प्रयाग (वी .के .दूबे 2002)आदि का अध्ययन हुआ है। परन्तु पवित्र संकुल के अवधारणाओं से परिपूर्ण गोरखधाम पवित्र संकुल का अध्ययन मेरे संज्ञान में मानव शास्त्रीय दृष्टि से अनभिज्ञ था।जिसको इस शोध में पूरा करने का प्रयास किया गया है।इसके अंतर्गत गोरखधाम पवित्र संकुल का समग्रता से अध्ययन करने का प्रयास किया गया है, जिसमें गुणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग मुख्य रुप से किया गया है।एल .पी .विद्यार्थी की विभिन्न अवधारणाओं,पवित्र भूगोल,पवित्र विशेषज्ञ एवं पवित्र अनुष्ठान का प्रयोग करते हुए शोधार्थी ने पवित्र संकुल का परीक्षण किया है।पवित्र संकुल को परखने के लिए निम्न लिखित परिकल्पनाएं बनाई गयीं थी,जिसका विश्लेषण निम्न प्रकार से है।

मेरी परिकल्पना थी-

1.(a^0) पवित्र संकुल पवित्र भूगोल,पवित्र विशेषज्ञ,पवित्र अनुष्ठान का संश्लेषण है।

(a^1) पवित्र संकुल पवित्र भूगोलपवित्र विशेषज्ञ,पवित्र अनुष्ठान का संश्लेषण नहीं है।

2. (a^0) पवित्र संकुल गोरखधाम का समग्र मानव शास्त्रीय विश्लेषण करने में समर्थ है।

(a^1) पवित्र संकुल गोरखधाम का समग्र मानव शास्त्रीय विश्लेषण करने में समर्थ नहीं है।

अध्याय चतुर्थ में गोरखधाम के इतिहास ,नाथ सम्प्रदाय का परिचय ,पवित्र विशेषज्ञों की व्याख्या तथा विश्लेषण एवं उनकी जीवन पद्वति को दर्शाने का प्रयास किया गया है। जिसे कई नए तत्व व विशेष प्रकार की संरचना सामने आयी। इस अध्याय में पवित्र विशेषज्ञ की भूमिका में मुख्य रूप से नाथ योगी ही नहीं बल्कि सामाजिक हित में कार्य को तत्पर्य सभी लोग जिनका उद्देश्य पवित्रता और धर्म को ध्यान में रखकर सेवा कार्य करना है। वे भी सभी पवित्र विशेषज्ञ की श्रेणी में आयेंगे, जैसे- दुकानदार, ब्राह्मण,पूजारी, पर्यटक, शोधार्थी इसलिए उन्हें भी पवित्र विशेषज्ञ की संज्ञा देना तर्क संगत है। परंतु एल०पी०विद्यार्थी जी ने अपनी पुस्तक 'गया' में विशेषकर पवित्र विशेषज्ञ के रूप में पंडों एवं पूजारी और तीर्थयात्रियों पर ध्यान दिया है। इसलिए पवित्र-संकुल की इस अवधारणा को शोधार्थी ने परिवर्तन की प्रक्रिया में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जो एल .पी विद्यार्थी की संश्लेषित अवधारणा से सम्बन्धित है परन्तु कुछ हद तक भिन्न भी।

इसलिए पवित्र विशेषज्ञ की परिकल्पना इस अध्याय में पूर्णत: सत्य नहीं मानी जा सकती है। इसलिए यह परिकल्पना असत्य प्रतीत होती है।

एल .पी विद्यार्थी की संश्लेषित अध्याय पंचम में पवित्र संकुल के उपागमो को परखने का प्रयास किया गया है ,जिसमें पवित्र भूगोल ,पवित्र स्थल व पवित्र क्षेत्र के विभिन्न प्रकार के सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में पवित्र संकुल द्वारा संचालित कार्यो का उल्लेख किया गया है, जिसे एक नयी दृष्टिकोण उभर कर सामने आती कई नए तत्व व विशेष प्रकार की संरचना सामने आयी, जो एल .पी विद्यार्थी की संश्लेषित अवधारणा से सम्बन्धित है परन्तु कुछ हद तक भिन्न भी है। गोरखधाम पवित्र संकुल की ऐतिहासिक एवं धार्मिक पृष्ठिभूमि अन्य पवित्र संकुलों की अपेक्षा काफी भिन्न है,क्योंकि यहां के पवित्र भूगोल में न केवल देवी-देवताओं, पवित्र वृक्ष (बरगद,पीपल,नीम) ही नहीं बल्कि चिकित्सालय,जहां रोगी की देखभाल व चिकित्सा की जाती है।जिसमें चिकित्सक और नाथ योगी कार्यकर्त्ता के रूप में रुप में लोगों

को सेवा प्रदान करतें हैं।यह अपने आप में पवित्र संकुल के पवित्र भूगोल की अवधारणा जो विद्यार्थी जी ने दी है उसमे परिवर्तन की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से व्यक्त करती है जो शोधार्थी को प्रभावित करती है।

यहां परम्परा,संस्कृति और सामाजिक सेवा कार्य का संगम प्रत्येक दिन देखा जा सकता है। एक तरफ जहां लोंग गोरखनाथ पवित्र संकुल के दर्शन व पवित्र क्रिया-कलाप के लिए आतें हैं वही कुछ लोग सांसद व योगी आदित्यनाथ के दरबार (सुबह 9 से 11 बजे तक)में विभिन्न व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं को लेकर योगी जी के पास आतें है।उनका विश्वास भी योगी के प्रति रहता है की वे उनकी समस्याओं का समाधान जरुर करेंगे। आप गोरखधाम में हो तो धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक कार्यों का सामंजस्य यहां आप भली-भांति देख सकते हैं। निवासी नियमित आधार पर अभ्यस्त हैं। यहां पवित्र संकुल के ही परिसर में नाथ योगी समृद्ध संस्कृति के साथ लुभावनी दृश्यावली व प्राकृतिक दृश्य का अवलोकन कर आप प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते।

गोरखधाम पवित्र संकुल के पीठाधीश्वर का मानना है कि मनुष्य और समाज का आध्यात्मिक और बौद्धिक उत्कर्ष शिक्षा के ही माध्यम से होता है। शिक्षा से मनुष्य का जीवन विशुद्ध प्रज्ञासंपन्न परिष्कृत और समुन्नत ही नहीं होता बल्कि समाज भी सात्विक और नैतिक निर्देशों का पालन करता हुआ सन्मार्ग पर चलकर विकसित होता है। अतः किसी देश अथवा समाज में जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी वैसा ही समाज बनेगा। योगी जी का मानना है कि भारतीय संस्कृति से महकता शिक्षा परिषद में अपने आचरण व्यवहार से पाठ पढ़ाते प्राध्यापक राष्ट्र भक्ति और भारत माता के लिए सर्वस्व समर्पण का जज्बा पैदा करने वाले चरित्र का निर्माण पाठ्यक्रमों से नहीं तो हम अपने प्रयास एवं आचरण से तो कर ही सकते हैं। प्रत्येक भारतीय में भारत की भाषाओं धर्म तथा संस्कृति के प्रति आदर भाव होना चाहिए।

गोरखधाम पवित्र संकुल द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थाओ का उद्देश्य भी शिक्षा के द्वारा युवा पीढ़ी को राष्ट्रीय भावना, व देश हित कार्यों की तरफ आगे बढ़ना के लिए प्रेरित करते हुए शिक्षा प्रदान करना ही इनका प्रमुख उद्देश्य है।

गोरखधाम परिसर में ही स्थापित आयुर्वेदिक एवं ऐलोपैथिक चिकित्सालय चिकित्सा की कम कीमत व अन्य चिकित्सालयों से बेहतर चिकित्सा भी एक महत्वपूर्ण कारण है कि यहां काफी दूर-दूर जगहों से लोग इलाज करने आते हैं जिसे हम चिकित्सा पर्यटन भी कह सकते हैं। लोगों का ऐसा मानना है कि यहां चिकित्सा के साथ-साथ आध्यात्म से भी जुड़ने का एक अवसर प्राप्त होता है,जिससे रोगी को आंतरिक शांति प्राप्ति होती है और वह जल्दी ठीक होता है। इस दृष्टिकोण से भी यहां हजारों की संख्या में बाहरी पर्यटक आते हैं।

अर्थात गोरखधाम पवित्र संकुल के नाथ योगी धार्मिक क्रियाओं में सक्रिय होने के साथ-साथ समाज के विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों पर आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक, चिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में किस प्रकार कार्य कर रहे हैं, शोधार्थी ने इसकी व्याख्या पञ्चम अध्याय में की है। इस प्रकार पवित्र-संकुल पर पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण तथा वैज्ञानिक शिक्षा का किस प्रकार प्रभाव पड़ रहा है इसका भी उल्लेख किया गया है। पवित्र भुगोल के परिवर्तित स्वरूप को भी समझानें का प्रयास किया गया है। इसलिए यह परिकल्पना असत्य प्रतीत होती है।

हिंदु तीर्थ का पवित्र संकुल लघु एवं वृहद परंपराओं के बीच निरंतरता, समझौते तथा सम्मिलन का स्तर परस्तुत करता है।जैसे गोरखधाम के पवित्र संकुल के पवित्र अनुष्ठान में वृहद परंपरा के पवित्र स्थलों में लघु परंपरा के तत्व निरंतरता पैदा करते हैं यहां इस पवित्र परिसर में ही कई स्थलों भक्त विशेषज्ञ एकत्रित होते हैं। और लघु परम्परागत धार्मिक क्रिया करते हैं जैसे- भैरव मंदिर के स्थान पर त्रिशूल चढ़ने की परंपरा, पीपल वृक्ष में धागे बांधना

और परिक्रमा करने की विधान। कुछ नयी परंपराओं में भी यह विधान होता है। यह सभी प्रक्रिया लघु परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है जो वृहद परंपरा के साथ मिलकर एक पवित्र संकुल बनाता है। इस प्रकार देखा जा सकता है कि अनेक लघु परंपराओं में पवित्र विशेषज्ञों की भागेदारी लगातार बनी हुयी है। जिससे लघु एवं वृहद परंपराओं के बीच निरंतरता बनी हुयी है।

गोरखधाम पवित्र संकुल के नाथ योगियों की जीवन शैली शास्त्रोक्त पद्धतिनुसार सुबह स्नान करना,योगासन,ललाट में चन्दन, त्रिशूल और जनेऊ धरण करना,कान में कुंडल, मंत्रोच्चारण एवं प्रार्थना करना तो है ही पर साथ में इन नाथ योगियों का अन्य क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान है जैसे- समाजिक कार्य द्वारा नाथ योगी अपनी विशिष्ठ जीवन शैली से वृहद परंपरा के तत्व का संचार करतें हैं।

अध्याय षष्टम में पवित्र संकुल में पर्यटन के प्रभाव को बताया गया है, जिसके अंतर्गत सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलुओं को दृष्टिकोंण में रखकर उल्लेख किया गया है जिसको एक नयी अवधारणा से देखने का प्रयास किया गया है गोरखधाम पवित्र संकुल पर देश विदेश से तीर्थयात्री एवं पर्यटक आते हैं। इससे के आस -पास के होटल, वाहन व यात्रा के साधनों व इनसे जुड़े नाना प्रकार के छोटे-बड़े उद्योगों को बढ़ावा मिलने के कारण इनका आर्थिक विकास भी होता है। सरकार भी तीर्थ स्थलों व पर्यटन स्थलों के विकास के लिए सावधान हैं जिससे यहां के लोगों लाभ हो रहे हैं। यह भी बताना चाहते हैं - कि तीर्थ स्थान का अर्थ होता है कि जहां जाने से दुःख छूट जायें। प्राचीन काल से ही गोरखधाम पवित्र संकुल स्थल पर गोरक्षनाथ एवं बड़े-बड़े नाथ योगी, ईश्वर के उपासक, ज्ञानी, चिन्तक व विचारक रहते आए हैं, उनके इसे मठ को ही गोरखधाम की मंदिर की संज्ञा दी गयी। यहां आने से तीर्थयात्री अपनी शंकाओं, समस्याओं, दुःखों, सामाजिक व आध्यात्मिक प्रश्नों का समाधान पाते हैं।

वर्तमान में तीर्थ स्थानों पर जाने का महात्म्य तो बहुत बताया जाता हैगोरखधाम पवित्र संकुल पर देश विदेश से तीर्थयात्री एवं पर्यटक आते हैं। इससे के आस -पास के होटल, वाहन व यात्रा के साधनों व इनसे जुड़े नाना प्रकार के छोटे-बड़े उद्योगों को बढ़ावा मिलने के कारण इनका आर्थिक विकास भी होता है। सरकार भी तीर्थ स्थलों व पर्यटन स्थलों के विकास के लिए सावधान हैं जिससे यहां के लोगों लाभ हो रहे हैं। यह भी बताना चाहते हैं कि तीर्थ स्थान का अर्थ होता है कि जहां जाने से दुःख छूट जायें। प्राचीन काल से ही गोरखधाम पवित्र संकुल स्थल पर गोरक्षनाथ एवं बड़े-बड़े नाथ योगी, ईश्वर के उपासक, ज्ञानी, चिन्तक व विचारक रहते आए हैं, उनके इसे मठ को ही गोरखधाम की मंदिर की संज्ञा दी गयी।यहां आने से तीर्थयात्री हों या पर्यटक सभी अपनी शंकाओं, समस्याओं, दुःखों, सामाजिक व आध्यात्मिक प्रश्नों का समाधान पाते हैं। आजकल तीर्थ स्थानों पर जाने सबके अपने अपनें दृष्टिकोण हैं।योग संस्थान द्वारा भी यहां लोगों को मानसिक व शारीरिक लाभ पहुचाया जाता है यह संस्थान भी पवित्र भूगोल के अंतर्गत ही आता है जहां प्रत्येक आयु वर्ग के लोग योगासन का लाभ उठाते हैं।

वर्तमान परिपेक्ष्य में पवित्र संकुल के तत्व-

क्रं	पवित्र संकुल के तत्व	एल. पी.विद्यार्थी के अनुसार (गया)	मेरे शोध के अनुसार (गोरखधाम)
1	पवित्र भूगोल	देव स्थान ,पवित्र पेड़,पवित्र स्थल,पवित्र केंद्र,पवित्र खंड	देव स्थान,पवित्र संकुल, मंदिर के प्रांगण में मौजूद चिकित्सालय,शैक्षणिक संस्थान
2	पवित्र अनुष्ठान	पवित्र क्रिया कलाप जैसे-पूजा,हवन,बलि,जल अर्पण, विभिन्न हिन्दू संस्कार	पूजा ,हवन ,बलि, विभिन्न हिन्दू संस्कार, चिकित्सा,शैक्षणिक संस्थान,योगासन प्रशिक्षण
3	पवित्र विशेषज्ञ	पंडे-पूजारी,तीर्थयात्री	नाथ योगी,तीर्थयात्री, पर्यटक,दुकानदार, शोधार्थी

शोधार्थी अनुसार अगर वर्तमान में ये सारी अवधारणाए जोड़ी जायें तो सही मायने में गोरखधाम पवित्र संकुल को एक पवित्र भूगोल, पवित्र विशेषज्ञ,और पवित्र अनुष्ठान के परिवर्तित स्वरूप में समझा जा सकता है।

- **पवित्र संकुल पर सुझाव :** पवित्र संकुल के विकास तथा परिवर्तन को ध्यान में रखते हुये शोधार्थी द्वारा अध्ययन के दौरान कुछ विशेषज्ञ पहलुओं में परिवर्तन किया जाना चाहिए जो इस प्रकार है –

(1) पवित्र संकुल में ही कई नाथ योगी और वहां कार्य कर रहे कार्यकर्ता जो आपस में सार्वजनिक तौर पर अपशब्दों और गाली-गलौज का उपयोग करते हैं उनके ऊपर पीठाधीश्वर द्वारा कड़ी कार्यवाही का आदेश होना चाहिए।

(2) पवित्र संकुल तथा उससे जुड़ी जितनी भी संस्थायें हैं फिर चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो या स्वास्थ्य एवं समाज कार्य के ये सभी ट्रस्ट पर आधारित है जिसे सार्वजनिक किया जाए ताकि लोगों को पता चले कि किन-किन कार्यों में इनका उपयोग किया जा रहा है।

(3) पवित्र संकुल में स्थित मंदिरों में ज्यादातर अशिक्षित एवं वृद्ध नाथ योगी को ही मंदिर की देख-रेख का कार्य दिया गया है इस पर भी ध्यान देना चाहिए।

(4) पवित्र संकुल में विशेष पर्व एवं त्यौहार में अराजक तत्व के विचार के लोग भी प्रवेश करते हैं। जिससे तीर्थयात्रियों को कई तरह की आर्थिक एवं अमानवीय व्यवहार का सामना करना पड़ता है। इस पर भी ध्यान देना चाहिए।

(5) पवित्र संकुलों में मानवशास्त्रियों की सरकारी नियुक्ति होनी चाहिए जो हर 2 या 3 साल में पवित्र संकुल की रिपोर्ट सरकार को दे। ताकि पवित्र संकुल में हो रही गतिविधि एवं परिवर्तन को समझा जा सके।

(6) पवित्र संकुल पर मिलनें वाली खान–पान की वस्तुओं पर सरकार ध्यान दें ,क्योकि इन पवित्र स्थलों में मिलावटी समान मिलने का की आशंका रहती है।

(7) पवित्र संकुल की तरफ आ रही सड़कों तथा यातायात अवरोध उत्पन्न ना हो इसपे भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

****